कृषिः विकसित भारत के लिए समग्र और सतत विकास की आधारशिला

सूर्यम चापरा
विपणन प्रमुख, जिवाग्रो

भारत, जो परंपरा, संस्कृति और विविधता से समृद्ध भूमि है, ने सदैव कृषि को अपनी अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना के केंद्र में रखा है। जैसा कि राष्ट्र विकसित भारत की कल्पना करता है - 2047 तक एक विकसित, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत - कृषि के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है। कृषि केवल एक क्षेत्र नहीं है, यह ग्रामीण आजीविका, खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिक संतुलन की रीढ़ है। टिकाऊ कृषि प्रथाओं को एकीकृत करके और समग्र ग्रामीण विकास को बढ़ावा देकर, भारत समावेशी विकास, पर्यावरणीय स्थिरता और दीर्घकालिक समृद्धि की ओर एक रास्ता बना सकता है।

कृषिः भारत की अर्थव्यवस्था की नींव

कृषि भारतीय कार्यबल के 40 प्रतिशत से अधिक को रोजगार देती है और सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। अपनी आर्थिक भूमिका से परे, कृषि सामाजिक गतिशीलता को आकार देती है, परंपराओं को बनाए रखती है और खाद्य संप्रभुता सुनिश्चित करती है। वैश्विक नेता बनने का लक्ष्य रखने वाले देश के लिए, कृषि

का परिवर्तन महत्वपूर्ण है-न केवल उत्पादकता में वृद्धि के माध्यम से बल्कि पारिस्थितिक और सामाजिक स्थिरता के माध्यम से।

बढ़ती मांग और उत्पादन आवश्यकता

भारत की जनसंख्या 2047 तक 1.7 बिलियन से अधिक होने की आशा है, खाद्य और पोषण सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता बनी हुई है। अनुमान है कि भारत को 2050 तक 450 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्न उत्पादन की आवश्यकता होगी, जो वर्तमान 330 मिलियन टन से एक महत्वपूर्ण छलांग है। इस वृद्धि में दालों, तिलहन, फलों, सब्जियों और प्रोटीन स्रोतों जैसे विविध खाद्य समूहों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।
इसे प्राप्त करने के लिए, पर्यावरण को हानि पहुँचाए बिना कृषि उत्पादकता में वृद्धि करनी होगी, जिसके लिए अधिक टिकाऊ और जलवायु-स्मार्ट खेती की विधियों में बदलाव की आवश्यकता है।

अंतराल को पाटनाः उत्पादन लक्ष्यों को प्राप्त करने में चुनौतियाँ

कई प्रगति के बाद भी, भारत अभी भी प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रहा हैः

- **उपज अंतरालः** भारत में प्रमुख फसलें अक्सर वैश्विक मानकों की तुलना में प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन करती हैं।
- **कीटों और बीमारियों से हानिः** जैविक तनाव के कारण हर साल लगभग 20-30 प्रतिशत फसलें नष्ट हो जाती हैं।
- **जलवायु भेद्यताः** अनियमित मानसून, तापमान में उतार-चढ़ाव और चरम मौसम खेती के परिणामों को प्रभावित करते हैं।
- **फसल कटाई के बाद हानिः** कोल्ड

चेन की कमी, खराब मूलभूत संरचना और अपर्याप्त प्रसंस्करण सुविधाओं के कारण खाद्यान्न की काफी हानि होती है।

● **संसाधनों की कमीः** भूजल, रासायनिक उर्वरकों और खराब मिट्टी प्रबंधन का अत्यधिक उपयोग दीर्घकालिक उत्पादकता को प्रभावित करता है।

फसल सुरक्षा कंपनियों की भूमिका

इन उत्पादकता अंतरों को स्थायी रूप से पाटने के लिए, फसल सुरक्षा कंपनियाँ एक आवश्यक भूमिका निभाती हैं:

● **फसल के हानि को कम करनाः** प्रभावी कीट और रोग प्रबंधन के माध्यम से, वे फसलों की सुरक्षा करने और स्थिर पैदावार सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं।

● **स्थायी समाधानों को बढ़ावा देनाः** जैव-कीटनाशकों, अवशेष-मुक्त योगों और एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) का उपयोग बढ़ाना।

● **किसान प्रशिक्षणः** किसानों को सुरक्षित, सटीक और पर्यावरण के अनुकूल अनुप्रयोग विधियों के बारे में शिक्षित करना।

● **नवाचार को सक्षम करनाः** कई कंपनियाँ जलवायु-लचीले फसल सुरक्षा समाधानों के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश करती हैं जो स्थायी कृषि प्रथाओं के साथ संरेखित होते हैं।

खेत की हानि को कम करने, उत्पादकता बढ़ाने और सुरक्षित खाद्य प्रणालियों को सुनिश्चित करने के लिए ये प्रयास महत्वपूर्ण हैं।

स्थायी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकारी पहलों के साथ सहयोग करें।

भारत सरकार ने एक लचीला, उत्पादक और टिकाऊ कृषि क्षेत्र बनाने के उद्देश्य से कई प्रमुख योजनाएँ और पहल आरम्भ की हैं:

● **परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई):** रासायनिक निर्भरता को कम करने के लिए जैविक खेती और पर्यावरण के अनुकूल इनपुट को बढ़ावा देती है।

● **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई):** जल उपयोग दक्षता में सुधार और सूक्ष्म सिंचाई को बढ़ावा देकर "हर खेत को पानी" का लक्ष्य रखती है।

● **राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए):** मृदा स्वास्थ्य कार्ड, कृषि वानिकी और एकीकृत कृषि प्रणालियों के माध्यम से जलवायु-लचीली कृषि पर ध्यान केंद्रित करता है।

● पीएम-किसान एवं पीएमएफबीवाईरू प्रत्यक्ष आय सहायता और फसल बीमा योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता और जोखिम शमन सुनिश्चित करें।

● **डिजिटल कृषि मिशनः** खेती की विधियों और निर्णय लेने को आधुनिक बनाने के लिए एआई, आईओटी एवं जीआईएस तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देता है।

ये पहल किसानों के लिए स्थिरता, संसाधन दक्षता और आय सुरक्षा की ओर बदलाव को दर्शाती हैं।

भावी कदमः खाद्य सुरक्षा से वैश्विक खाद्य नेतृत्व तक

जबकि घरेलू खाद्य सुरक्षा सर्वोपरि है, भारत वैश्विक खाद्य सुरक्षा में भी बड़ी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। चावल, गेहूं, मसालों, दालों और डेयरी के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक होने के नाते, भारत ने लगातार कृषि निर्यात में वृद्धि की है, जिससे विश्व खाद्य आपूर्ति में योगदान मिला है।

इस दिशा में प्रमुख कदम निम्नलिखित हैं:

● **कृषि निर्यात नीतिः** निर्यात बास्केट में विविधता लाने, प्रतिबंधों को हटाने और निर्यातोन्मुखी खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से।

● **मूलभूत संरचना समर्थनः** पीएम-एफएमई जैसी योजनाओं के तहत कृषि निर्यात क्षेत्रों (एईजेड), मेगा फूड पार्क और कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स का विकास।

● **वैश्विक मानक और पता लगाने की क्षमताः** अंतर्राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मानदंडों को पूरा करने के लिए अच्छे कृषि अभ्यास (जीएपी), जैविक प्रमाणीकरण और ब्लॉकचेन-आधारित पता लगाने की क्षमता को बढ़ावा देना।

● **वैश्विक खाद्य कूटनीति में भागीदारीः** भारत ने कई देशों को खाद्य सहायता और गेहूं निर्यात प्रदान किया है, जो एक विश्वसनीय वैश्विक खाद्य आपूर्तिकर्ता के रूप में इसकी क्षमता को रेखांकित करता है।

कृषि-निर्यात बढ़ाकर भारत न केवल ग्रामीण आय और विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाता है, बल्कि भूख और कुपोषण के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में भी योगदान देता है।

निष्कर्षः विकसित भारत के लिए बीज बोना

भारत जैसे-जैसे अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर बढ़ रहा है, विकसित भारत की दृष्टि समावेशी, टिकाऊ और परिवर्तनकारी कृषि विकास पर आधारित होनी चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करते हुए बढ़ती जनसँख्या को खिलाने के लिए आवश्यक खाद्य उत्पादन प्राप्त करना एक संतुलनकारी कार्य है - और कृषि इसके मूल में है।

निरंतर सरकारी समर्थन, फसल सुरक्षा में नवाचार, टिकाऊ प्रथाओं और निर्यात की ओर सुदृढ़ कदम के साथ, भारतीय कृषि न केवल अपने नागरिकों के लिए भोजन सुनिश्चित कर रही है, बल्कि खाद्य सुरक्षा के वैश्विक स्तंभ के रूप में भी उभर रही है।

आइए आज हम एक उन्नत कल के लिए आगे बढ़ें - जो वास्तव में हरित, समावेशी, लचीला और विकसित हो।